International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

SSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

Dr. Abhinandan Swaroop

M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

सार

अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ (22 अक्टूबर 1900 – 19 दिसम्बर 1927) भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के स्वतंत्रता सेनानी थे।[1][2] ख़ान का जन्म ब्रितानी भारत के शाहजहाँपुर में शफ़िक़ुल्लाह खान और मज़रुनिस्सा के घर हुआ। वो एक मुस्लिम पठान परिवार[3][4] के खैबर जनजाति में हुआ था।[5][6] वो छः भाई बहनों में सबसे छोटे थे।[7]वर्ष 1920 में महात्मा गांधी ने भारत में ब्रितानी शासन के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया। लेकिन वर्ष 1922 में चौरी चौरा कांड के बाद महात्मा गांधी ने आन्दोलन वापस ले लिया।[8]इस स्थिति में खान सहित विभिन्न युवा लोग खिन्न हुये। इसके बाद खान ने समान विचारों वाले स्वतंत्रता सेनानियों से मिलकर नया संगठन बनाने का निर्णय लिया और वर्ष 1924 में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन किया।[9]

परिचय

अपने आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए, हथियार खरिदने और अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक गोलाबारूद इकट्ठा करने के लिए, हिन्दुस्तानी सोशिलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सभी क्रान्तिकारियों ने शाहजहाँपुर में 8 अगस्त 1925 को एक बैठक की। [1]

एक लम्बी विवेचना के पश्चात् रेलगाडी में जा रहे सरकारी खजाने को लूटने का कार्यक्रम बना। 9 अगस्त 1925 को खान सहित उनके क्रान्तिकारी साथियों राम प्रसाद 'बिस्मिल', राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह, शचीन्द्रनाथ बख्शी, चन्द्रशेखर आज़ाद, केशव चक्रवर्ती, बनवारी लाल, बनवारी लाल, मुरारी शर्मा, मुकुन्दी लाल और मन्मथनाथ गुप्त ने मिलकर लखनऊ के निकट काकोरी में रेलगाड़ी में जा रहा

SSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

ब्रितानी सरकार का खजाना लूट लिया।[7][10][11] रेलगाडी के लूटे जाने के एक माह बाद भी किसी भी लुटेरे की गिरफ़्तारी नहीं हो सकी। यद्यपि ब्रिटेन सरकार ने एक विस्तृत जाँच का जाल आरम्भ कर दिया था।[7] 26 अक्टूबर 1925 की एक सुबह, बिस्मिल को पुलिस ने पकड़ लिया और खान अकेले थे जिनका पुलिस कोई सुराख नहीं लगा सकी। वो छुपते हुये बिहार से बनारस चले गये, जहाँ उन्होंने दस माह तक एक अभियांत्रिकी कंपनी में काम किया। [2]उन्होंने अभियान्त्रिकी के आगे के अध्ययन के लिए विदेश में जाना चाहते थे जिससे स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाया जा सके और वो देश छोड़ने के लिए दिल्ली चले गये। उन्होंने अपने एक पठान दोस्त की सहायता ली जो पहले उनका सहपाठी रह चुका था। दोस्त ने उन्हें धोखा देते हुये उनका ठिकाना पुलिस को बता दिया[8][7] और 7 दिसंबर 1926 की सुबह पुलिस उनके घर आयी तथा उन्हें गिरफ्तार किया।खान को फैज़ाबाद कारावस में रखा गया और उनके विरुद्ध एक मामला आरम्भ किया गया। उनके भाई रियासतुल्लाह खान उनके कानूनी अधिवक्ता थे। कारावास के दौरान अशफ़क़ुल्लाह खान ने क़ुरान का पाठ किया और नियमित तौर पर नमाज पढ़ना आरम्भ कर दिया तथा इस्लामी माह रमज़ान में कठोरता से रोजे रखना आरम्भ कर दिया। काकोरी डकैती का मामला बिस्मिल, खान, राजेन्द्र लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह को फांसी की सजा सुनाकर पूरा किया गया।।[7][12][13]

खान को 19 दिसम्बर 1927 को फ़ैज़ाबाद कारावास में फ़ांसी की सजा दी गयी।[8] उनके क्रान्तिकारी व्यक्तित्व, प्रेम, स्पष्ट सोच, अडिग साहस, दृढ़ निश्चय और निष्ठा के कारण लोगों के लिए वो शहीद माने गये।[7][14] यह क्रांतिकारी व्यक्ति मातृभूमि के प्रति अपने प्रेम, अपनी स्पष्ट सोच, अडिग साहस, दृढ़ता और निष्ठा के कारण अपने लोगों के बीच शहीद और एक किंवदंती बन गया। खान और उसके साथियों के कार्य को हिन्दी फ़िल्म रंग दे बसंती (2006) में फ़िल्माया गया है जिसमें खान का अभिनय कुणाल कपूर ने किया। स्टार भारत की टेलीविजन शृंखला चन्द्रशेखर में चेतन्य अदीब ने खान का अभिनय किया है।वर्ष 2014 में डीडी उर्दू पर भारतीय टेलीविजन शृंखला मुजाहिद-ए-आज़ादी - अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ प्रसारित की गयी जिसमें गौरव नंदा ने अभिनय किया।[15]

विचार-विमर्श

अशफाकउल्ला खान एक भारतीय क्रांतिकारी थे जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष के दौरान एक स्वतंत्रता सेनानी और कार्यकर्ता के रूप में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) संगठन की स्थापना में योगदान दिया था। वर्ष 1922 में वह एक प्रमुख प्रस्तावक के रूप में काकोरी ट्रेन डकैती में शामिल थे। काकोरी ट्रेन डकैती भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख घटना थी।अशफाक उल्ला खान एक महान लेखक थे वह प्रमुख रूप से डायरी और देशभक्ति कविताएँ लिखते थे। खान ने अपने एक लेख में इस बात का जिक्र करते हुए बताया कि उनके मामा के परिवार के सदस्य ब्रिटिश सरकार में पुलिसकर्मी और प्रशासनिक अधिकारी थे और उनके पिता एक सैन्य परिवार से ताल्लुक रखते थे और उनके पैतृक परिवार के सदस्य ज्यादातर अशिक्षित थे।अशफाकउल्ला खान द्वारा उर्दू में कविताएं या ग़ज़ल लिखते समय इस्तेमाल किए जाने वाले वारसी और हसरत छद्म शब्द थे। उनकी कुछ शायरी अंग्रेजी और हिंदी भाषाओं में भी लिखीं हैं ज्यादातर उन्होंने देशभक्ति की कविताएँ और ग़ज़लें लिखीं हैं और उनकी प्रसिद्ध कविता की कुछ पंक्तियों का उल्लेख नीचे किया गया है:[3]

किये थे काम हमने भी जो कुछ भी हमसे बन पाए, ये बातें तब की हैं आज़ाद थे और था शबाब अपना; मगर अब तो जो कुछ भी हैं उम्मीदें बस वो तुमसे हैं, जबां तुम हो, लबे-बाम आ चुका है आफताब अपना। जाऊंगा

SSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

खाली हाथ मगर ये दर्द साथ ही जायेगा, जाने किस दिन हिन्दोस्तान आज़ाद वतन कहलायेगा? बिस्मिल हिन्दू हैं कहते हैं "फिर आऊंगा, फिर आऊंगा,फिर आकर के ऐ भारत मां तुझको आज़ाद कराऊंगा"। जी करता है मैं भी कह दूँ पर मजहब से बंध जाता हूँ, मैं मुसलमान हूं पुनर्जन्म की बात नहीं कर पाता हूं; हां खुदा अगर मिल गया कहीं अपनी झोली फैला दूंगा, और जन्नत के बदले उससे यक पुनर्जन्म ही माँगूंगा।"उनके एक लेखन ने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की रणनीति फूट डालो और राज करो की साजिश की ओर इशारा किया। उनके लेखन से एक और प्रसिद्ध वाक्य का उल्लेख नीचे किया गया है:[4]

फूट डालकर शासन करने की चाल का हम पर कोई असर नहीं होगा और हिंदुस्तान आजाद होगा।"छोटा उल्ला खाँ अशफाकउल्ला खाँ के बड़े भाइयों में से एक थे छोटा उल्ला खाँ पंडित राम प्रसाद बिस्मिल के सहपाठी थे। 1918 में मैनपुरी षडयंत्र केस के बाद राम प्रसाद बिस्मिल ब्रिटिश पुलिस से फरार थे। छोटा उल्ला खाँ अशफाकउल्ला खाँ को रामप्रसाद बिस्मिल की वीरतापूर्ण देशभक्ति की कहानियाँ सुनाया करते थे।[5]

अशफाकउल्ला खान पंडित राम प्रसाद बिस्मिल के देशभक्त व्यक्तित्व से काफी प्रेरित थे इस प्रकार जब 1920 में बिस्मिल उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर आए तो खान ने उनसे मिलने की बहुत कोशिश की। वर्ष 1922 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन द्वारा आयोजित एक जनसभा के दौरान खान ने बिस्मिल से मुलाकात की।राम प्रसाद बिस्मिल हिंदू पंडित समुदाय से थे और आर्य समाज आंदोलन के अनुयायी थे जबकि अशफाकउल्ला खान एक मुस्लिम समुदाय से थे। कथित तौर पर जाति, रंग और धर्म के बावजूद, बिस्मिल का उद्देश्य मातृभूमि के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करना था। इसलिए राम प्रसाद बिस्मिल ने अशफाकउल्ला खान को हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) संगठन में शामिल होने की अनुमति दी। खान के पोते 'अशफाक उल्लाह खान' ने एक मीडिया हाउस से बातचीत में यह कमेंट किया कि शुरुआत में बिस्मिल खान को सशस्त्र क्रांतिकारियों के अपने गिरोह में शामिल करने से हिचकिचाते थे।[6] उन्होंने कहा-

शाहजहाँपुर के अन्य पठानों की तरह खान का परिवार समृद्ध और संपन्न था उनके पिता एक कोतवाल थे और इसलिए बिस्मिल ने उन्हें पार्टी में शामिल करने के लिए समय निकाला। बिस्मिल ने स्वीकार किया कि खान को उन्हें अस्वीकार करने के लिए बहुत दबाव झेलना पड़ा लेकिन वह कभी नहीं माने उनकी दोस्ती सामान्य लोगों से अधिक थी क्योंकि यह समान विचारधारा, आदर्शों और देशभक्ति पर आधारित थी।"वर्ष 1922 में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के एक छोटे से शहर चौरी चौरा में बड़े पैमाने पर नरसंहार के बाद महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन को उनके द्वारा निलंबित कर दिया गया था। भारत की स्वतंत्रता के लिए इस आंदोलन में बड़ी से बड़ी संख्या में युवा और क्रांतिकारी जुड़े थे। असहयोग आंदोलन के रुकने से इन युवा स्वतंत्रता सेनानियों को निराशा हुई और अशफाकउल्ला खान उनमें से एक थे। आखिरकार खान ने शाहजहांपुर के पंडित राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में क्रांतिकारी आंदोलन की ओर रुख किया।वर्ष 1924 में राम प्रसाद बिस्मिल के मार्गदर्शन और नेतृत्व में अशफाकउल्ला खान और उनके साथियों ने भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने के लिए अपना अलग क्रांतिकारी संगठन स्थापित किया। हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का गठन 1924 में किया गया था[7], जो भारत में ब्रिटिश राज के खिलाफ सशस्त्र क्रांतियों पर केंद्रित था।भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ते हुए राम प्रसाद बिस्मिल और उनके साथियों ने हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) आंदोलन की स्थापना के तुरंत बाद खर्च

SSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

करने के लिए कुछ स्थानीय गांवों को लूट लिया। इस आंदोलन का मुख्य फोकस सशस्त्र बलों के माध्यम से अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त करना था। महात्मा गांधी के अहिंसा आंदोलनों के विपरीत था। अशफाकउल्ला खान अपने भाई की लाइसेंसी राइफल का इस्तेमाल कर स्थानीय डकैतियों में शामिल थे।वर्ष 1925 में राम प्रसाद बिस्मिल और हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) संगठन के अन्य क्रांतिकारियों ने हथियारों और गोला-बारूद के खर्च को पूरा करने के लिए काकोरी ट्रेन को लूटने की योजना बनाई। प्रारंभ में खान ट्रेन डकैती के खिलाफ थे और उन्होंने अपने समूह के सदस्यों को अपनी राय दी कि डकैती के परिणामस्वरूप कई निर्दोष यात्रियों की मौत हो सकती है और सुझाव दिया कि उनके गिरोह के सदस्य योजना को छोड़ दें। उन्होंने सिफारिश की-साथियों मैं इसे जल्दबाजी में उठाया गया[8] कदम मानता हूं। यह कुछ मायनों में एक अच्छी योजना नहीं हो सकती है लेकिन आइए हम अपनी ताकत और सरकार की ताकत के बारे में सोचें एक साधारण डकैती में ज्यादा पैसा शामिल नहीं होता है। इसके अलावा सरकार इसे कई सामान्य घटनाओं में से एक मानेगी। हमें वही झेलना होगा जो पुलिस ऐसे मामलों में आम तौर पर करती है। यह एक अलग कहानी होगी जब वह सरकार के पैसे के साथ हस्तक्षेप करेगें। हमें टॉर्चर करने और कुचलने के लिए पूरी सरकारी मशीनरी का इस्तेमाल किया जाएगा। मेरी राय में हम पहचान और सजा से बच नहीं सकते। हमारी पार्टी इतनी मजबूत नहीं है। आइए इस योजना को छोड़ दें।"[9]

परिणाम

खान द्वारा दी गई सलाह को उनकी टीम के सदस्यों ने नजरअंदाज कर दिया और भारत को स्वतंत्र देखने के जुनून ने उन्हें 1925 में काकोरी ट्रेन लूटने के लिए प्रेरित किया। इस डकैती की योजना अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ भारत में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) आंदोलन के माध्यम से हथियारों की क्रांति को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई थी।8 अगस्त 1925 को हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के क्रांतिकारी सदस्यों द्वारा काकोरी ट्रेन को लूटने के लिए शाहजहांपुर में एक बैठक आयोजित की गई थी। एक बार राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी यात्रा में देखा कि काकोरी-लखनऊ ट्रेन में सरकारी खजाने की कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं थी। ट्रेन को लूटने की जिम्मेदारी अशफाकउल्ला खान, राम प्रसाद बिस्मिल, राजेंद्र लाहिरी, ठाकुर रोशन सिंह, सचिंद्र बख्शी, चंद्रशेखर आजाद,[10] केशव चक्रवर्ती, बनवारी लाल, मुरारी लाल गुप्ता, मुकुंदी लाल और मनमथनाथ गुप्ता को दी गई थी।9 अगस्त 1925 को ट्रेन शाहजहाँपुर से लखनऊ के लिए रवाना हुई और क्रांतिकारी पहले ही ट्रेन में सवार हो गए। सफर के बीच में किसी ने ट्रेन की चेन खींच ली। इससे ट्रेन रुक गई और अचानक चेन खींचने का कारण जानने के लिए गार्ड ट्रेन से बाहर आ गया। तब अशफाकउल्ला खान, सचिंद्र बख्शी और राजेंद्र लाहिरी भी अपनी योजना को अंजाम देने के लिए द्वितीय श्रेणी के डिब्बे से ट्रेन से बाहर आ गए। मौका मिलते ही क्रांतिकारियों ने गार्ड को पकड़ लिया और उनमें से कुछ ने ट्रेन के ड्राइवर को कसकर पकड़ लिया। कुल क्रांतिकारियों में से दो को किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर नजर रखने के लिए लोडेड राइफलों के साथ ट्रेन के दोनों सिरों पर खड़े होने की जिम्मेदारी दी। डकैती के दौरान क्रांतिकारियों ने ट्रेन के यात्रियों को भी सतर्क कर दिया। उन्होंने कहा-यात्रियों डरो मत। हम स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले क्रांतिकारी हैं।[11] आपका जीवन पैसा और सम्मान सुरक्षित है। लेकिन ध्यान रहे कि ट्रेन से भागे न।"लूट की योजना को अंजाम देने के दौरान गार्ड के केबिन में रुपयों का डिब्बा मिला। क्रांतिकारियों ने डिब्बे को ट्रेन के बाहर घसीटा। बॉक्स के शीर्ष को एक मजबूत ताले से बंद कर दिया गया था। क्रांतिकारियों ने हथौड़ों और पिस्तौल की मदद से बॉक्स के ताले को तोड़ने की कोशिश की। जल्द ही अशफाकउल्ला खान पैसे के डिब्बे की ओर दौड़े। सभी क्रांतिकारियों में सबसे मजबूत होने के कारण

SSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

उन्होंने बॉक्स को बहुत आसानी से तोड़ दिया। उसी दौरान जब डकैती चल रही थी तभी विपरीत दिशा से एक और ट्रेन के आने की आवाज सुनाई दी। डकैती के नेता के रूप में राम प्रसाद बिस्मिल दो ट्रेनों की टक्कर के बारे में सोचकर कुछ देर के लिए कांपने लगे। इस बीच उन्होंने अपने क्रांतिकारियों को पैसे की पेटी पर फायरिंग बंद करने का आदेश दिया। उन्होंने कहा-फायरिंग बंद करो। पिस्तौल बंद करो। बॉक्स को मत खोलो। अशफाक, थोड़ा रुकिए।"[12]

हालांकि दूसरी ट्रेन दूसरे ट्रैक पर गुजर गई। क्रांतिकारियों ने बॉक्स पर लगातार वार जारी रखा जिसने अंततः बॉक्स के ताले को चौड़ा कर दिया। जल्द ही बॉक्स से सभी पैसे के बैग राम प्रसाद बिस्मिल और उनके साथी निकाल लिए। पूरे डकैती के दौरान ब्रिटिश कर्मी और ट्रेन के यात्री चुपचाप रहे। हाथों में पैसों की थैलियां लिए लखनऊ की ओर रवाना हुए। घटना के तुरंत बाद ब्रिटिश सरकार ने काकोरी ट्रेन के लुटेरों को पकड़ने के लिए कई जांच प्रयास किए और एक महीने तक पुलिस उनके ठिकाने के बारे में अनजान रही। हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) आंदोलन के प्रमुख 'राम प्रसाद बिस्मिल' को पुलिस ने 26 अक्टूबर 1925 को पकड़ लिया। पुलिस ने अशफाक उल्ला खान को उनके घर से गिरफ्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह गन्ने के घने खेतों से होते हुए अपने घर से एक मील दूर भागने में सफल रहे। उधर ब्रिटिश पुलिस द्वारा तलाशी अभियान में राम प्रसाद बिस्मिल के गिरोह के अन्य सदस्यों को गिरफ्तार किया गया। प्रसिद्ध भारतीय स्वतंत्रता सेनानी गणेश शंकर विद्यार्थी से मिलने के लिए अशफाकउल्ला खान नेपाल के रास्ते कानपुर चले गए। जल्द ही वह बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ रहे अपने दोस्तों से मिलने काशी की ओर चल पड़े। वहां वह पलामू जिले के डाल्टनगंज में इंजीनियरिंग की नौकरी खोजने में कामयाब रहे। वहां उन्होंने दस महीने तक काम किया।इसके बाद खान ने लाला हरदयाल से और अधिक स्वतंत्रता संग्राम सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से विदेश जाने की योजना बनाई। [13]पहले वह दिल्ली गए जहाँ उनके एक बचपन का दोस्त रहता था। पठान अपने पुराने दोस्त अशफाकउल्ला खान से मिलकर बहुत खुश हुए। पठान ने पुलिस को अशफाकउल्ला के बारे में सूचित कर खान को धोखा दिया। गिरफ्तारी से एक रात पहले पठान और खान ने एक साथ खाना खाया और रात 11 बजे तक अपने बचपन की पुरानी यादों के बारे में बात की। अगली सुबह 17 जुलाई 1926 को पुलिस ने खान को पठान के घर से पकड़ लिया। गिरफ्तारी के बाद खान को फरीदाबाद जेल भेज दिया गया, जहां उनके बड़े भाई रियासतुल्लाह खान उनके कानूनी सलाहकार थे। कथित तौर पर खान जेल में रहने के दौरान नियमित रूप से कुरान का पाठ करते हुए रमजान के महीने में सख्ती से उपवास रहते थे। 19 दिसंबर 1928 को राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान, राजेंद्र लाहिरी, और ठाकुर रोशन सिंह को ब्रिटिश सरकार द्वारा काकोरी ट्रेन डकैती को अंजाम देने के लिए फांसी दे दी। जबकि गिरोह के अन्य सदस्यों को न्यायाधीश द्वारा आजीवन कारावास की सजा सुनाई।ब्रिटिश पुलिस द्वारा फांसी दिए जाने से पहले अशफाकउल्ला खान के अंतिम शब्द-मेरे हाथ मनुष्य की हत्या से गंदे नहीं हैं। मेरे खिलाफ आरोप झूठा है। भगवान इंसाफ करेगा"।[14] ला इलाही इल अल्लाह, मोहम्मद उर रसूल अल्लाह।"भारतीय इतिहास अशफाकउल्ला खान को एक शहीद और बहुत प्रसिद्ध काकोरी ट्रेन डकैती के लिए एक किंवदंती के रूप में मान्यता दिया है। वह स्पष्ट सोच, साहस और देशभक्ति के साथ एक मिशनरी थे जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ खड़े थे।मातृभूमि के लिए अशफाकउल्ला खान के बलिदान पर कई भारतीय फिल्मों और टेलीविजन सीरीजों का चित्रण किया गया है। फिल्म रंग दे बसंती में अशफाकउल्ला खान का अभिनय 2006 में भारतीय अभिनेता कुणाल कपूर द्वारा चित्रित किया गया। वर्ष 2014 में भारतीय टेलीविजन चैनल 'डीडी उर्दू' पर 'मुजाहिद-ए-आजादी-अशफाकउल्ला खान' नामक धारावाहिक का प्रसारण किया गया। जिसमें गौरव नंदा ने अशफाक उल्ला

SSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

खान का किरदार निभाया था। वर्ष 2018 में भारतीय टेलीविजन चैनल 'स्टार भारत' पर प्रसारित 'चंद्रशेखर' नामक एक और धारावाहिक में अशफाकुल्ला खान के चरित्र को दिखाया गया जिसे चेतन्या अदीब ने चित्रित किया है।भारतीय डाक सेवाओं ने 19 दिसंबर 1997 को अशफाकउल्ला खान और राम प्रसाद बिस्मिल के नाम और तस्वीरों वाला एक 2 रूपये का डाक टिकट जारी किया।[15]

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में शहीद अशफाकउल्ला खान के बलिदान का सम्मान करने के लिए, उत्तर प्रदेश सरकार ने जनवरी 2019 में खान के नाम पर 121 एकड़ के जूलॉजिकल गार्डन के निर्माण की घोषणा की। परियोजना की लागत रु. 234 करोड़ है जो राज्य सरकार द्वारा प्रदान किया गया था।अशफाकउल्ला खान और राम प्रसाद बिस्मिल ने अपने अलग-अलग धर्मों के बावजूद भारत की आजादी के लिए एक साथ काम किया। एक बार एक मीडिया रिपोर्टर को दिए इंटरव्यू में पंडित राम प्रसाद बिस्मिल के पोते राज बहादुर तोमर ने कहा कि खान और बिस्मिल की दोस्ती एक मिसाल थी। उन्होंने कहा-दोनों दोस्त एक साथ रहते थे और एक साथ काम करते थे। कहा जाता है कि उसी कमरे में बिस्मिल ने हवन किया था जबकि खान ने नमाज अदा की थी। वास्तव में उनके जीवन को अनुकरणीय उदाहरण के रूप में प्रदर्शित करने की आवश्यकता है।"[14]

निष्कर्ष

अशफ़ाक़ अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। सब उन्हें प्यार से अच्छू कहते थे। एक रोज उनके बड़े भाई रियासत उल्ला ने अशफ़ाक़ को बिस्मिल के बारे में बताया कि वह बड़ा काबिल सख्श है और आला दर्जे का शायर भी, गोया आजकल मैनपुरी काण्ड मॅ गिरफ्तारी की वजह से शाहजहाँपुर में नजर नहीं आ रहा। काफी अर्से से फरार है खुदा जाने कहाँ और किन हालात में बसर करता होगा। बिस्मिल उनका सबसे उम्दा क्लासफेलो है। अशफ़ाक़ तभी से बिस्मिल से मिलने के लिये बेताव हो गये। वक्त गुजरा। 1920 में आम मुआफी के बाद राम प्रसाद बिस्मिल अपने वतन शाहजहाँपुर आये और् घरेलू कारोबार में लग गये। अशफ़ाक़ ने कई बार बिस्मिल से मुलाकात करके उनका विश्वास अर्जित करना चाहा परन्तु कामयाबी नहीं मिली। चुनाँचे एक रोज रात को खन्नौत नदी के किनारे सुनसान जगह में मीटिंग हो रही थी अशफ़ाक़ वहाँ जा पहुँचे। बिस्मिल के एक शेर पर जब अशफ़ाक़ ने आमीन कहा तो बिस्मिल ने उन्हें पास बुलाकर परिचय पूछा। यह जानकर कि अशफ़ाक़ उनके क्लासफेलो रियासत उल्ला का सगा छोटा भाई है और उर्दू जुबान का शायर भी है, बिस्मिल ने उससे आर्य समाज मन्दिर में आकर अलग से मिलने को कहा। घर वालों के

SSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

लाख मना करने पर भी अशफ़ाक़ आर्य समाज जा पहुँचे और राम प्रसाद बिस्मिल से काफी देर तक गुफ्तगू करने के बाद उनकी पार्टी मातृवेदी के ऐक्टिव मेम्बर भी बन गये। यहीं से उनकी जिन्दगी का नया फलसफा शुरू हुआ। वे शायर के साथ-साथ कौम के खिदमतगार भी बन गये।[13]

महात्मा गांधी का प्रभाव अशफाक उल्ला खान के जीवन पर प्रारम्भ से ही था, लेकिन जब 'चौरी चौरा घटना' के बाद गांधीजी ने 'असहयोग आंदोलन' वापस ले लिया तो उनके मन को अत्यंत पीड़ा पहुँची। रामप्रसाद बिस्मिल और चन्द्रशेखर आज़ाद के नेतृत्व में 8 अगस्त, 1925 को शाहजहाँपुर में क्रांतिकारियों की एक अहम बैठक हुई, जिसमें हथियारों के लिए ट्रेन में ले जाए जाने वाले सरकारी ख़ज़ाने को लूटने की योजना बनाई गई। क्रांतिकारी जिस धन को लूटना चाहते थे, दरअसल वह धन अंग्रेज़ों ने भारतीयों से ही हड़पा था। 9 अगस्त, 1925 को अशफाक उल्ला खान , राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आज़ाद, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह, सचिन्द्र बख्शी, केशव चक्रवर्ती, बनवारी लाल, मुकुन्द लाल और मन्मथ लाल गुप्त ने अपनी योजना को अंजाम देते हुए लखनऊ के नजदीक 'काकोरी' में ट्रेन द्वारा ले जाए जा रहे सरकारी ख़ज़ाने को लूट लिया। 'भारतीय इतिहास' में यह घटना "काकोरी कांड" के नाम से जानी जाती है। इस घटना को आज़ादी के इन मतवालों ने अपने नाम बदलकर अंजाम दिया था। अशफाक उल्ला खान ने अपना नाम 'कुमारजी' रखा। इस घटना के बाद ब्रिटिश हुकूमत पागल हो उठी और उसने बहुत से निर्दोषों को पकड़कर जेलों में ठूँस दिया। अपनों की दगाबाजी से इस घटना में शामिल एक-एक कर सभी क्रांतिकारी पकड़े गए, लेकिन चन्द्रशेखर आज़ाद और अशफाक उल्ला खान पुलिस के हाथ नहीं आए।[12]

इस घटना के बाद अशफाक उल्ला खान शाहजहाँपुर छोड़कर बनारस आ गए और वहाँ दस महीने तक एक इंजीनियरिंग कंपनी में काम किया। इसके बाद उन्होंने इंजीनियरिंग के लिए विदेश जाने की योजना बनाई ताकि वहाँ से कमाए गए पैसों से अपने क्रांतिकारी साथियों की मदद करते रहें। विदेश जाने के लिए वह दिल्ली में अपने एक पठान मित्र के संपर्क में आए, लेकिन उनका वह दोस्त विश्वासघाती निकला। उसने इनाम के लालच में अंग्रेज़ पुलिस को सूचना दे दी और इस तरह अशफाक उल्ला खान पकड़ लिए गए।जेल में अशफ़ाक़ को कई तरह की यातनाएँ दी गईं। जब उन पर इन यातनाओं का कोई असर नहीं हुआ तो अंग्रेज़ों ने तरह–तरह की चालें चलकर उन्हें सरकारी गवाह बनाने की कोशिश की, लेकिन अंग्रेज़ अपने इरादों में किसी भी तरह कामयाब नहीं हो पाए। अंग्रेज अधिकारियों ने उनसे यह तक कहा कि हिन्दुस्तान आज़ाद हो भी गया तो भी उस पर मुस्लिमों का नहीं हिन्दुओं का राज होगा और मुस्लिमों को कुछ नहीं मिलेगा। इसके जवाब में अशफाक उल्ला खान ने अंग्रेज़ अफ़सर से कहा कि- "फूट डालकर शासन करने की चाल का उन पर कोई असर नहीं होगा और हिन्दुस्तान आज़ाद होकर रहेगा"। उन्होंने अंग्रेज़ अधिकारी से कहा- "तुम लोग हिन्दू-मुस्लिमों में फूट डालकर आज़ादी की लड़ाई को अब बिलकुल नहीं दबा सकते। अपने दोस्तों के ख़िलाफ़ मैं सरकारी गवाह कभी नहीं बनूँगा।" 19 दिसंबर 1927 को अशफाक उल्ला खान को फैजाबाद जेल में फाँसी दे दी गई।[15]

संदर्भ

1. S. Waris 2003, पृ॰ 8-14.
2. ↑ राव, एन॰पी॰ शंकरनारायण. Ashfaqulla Khan (अंग्रेज़ी में). लिटेंट.

SSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

3. ↑ "Ashfaqullah Khan – निर्भय क्रांतिकारी अशफ़ाक उल्ला खान". Jagran blog. अभिगमन तिथि 2018-03-07.
4. ↑ "अंग्रेजों की नाक के नीचे से लूटा था खजाना, 27 की उम्र में शहीद हुए थे अशफाक उल्ला खां". आज तक. अभिगमन तिथि 2018-03-07.
5. ↑ जोसेफ, रवीना (2015-09-03). "The martyr monologue". द हिन्दू (अंग्रेज़ी में). आइ°एस°एस°एन° 0971-751X. अभिगमन तिथि 2018-03-07.
6. ↑ वारिस, प्रो° फ़ारुख एस°. UNSUNG HEROES Volume-II. इंडस सोर्सबुक्स. पृ° 8. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-88569-33-5.
7. ↑ "Ashfaqulla Khan: The Immortal Revolutionary". भारत सरकार की वेबसाइट. मूल से 2002-11-05 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 7 मार्च 2018.
8. ↑ Aug 2, Aparna Singh / TNN /; 2004; Ist, 02:42. "Daredevilry of sons of the soil | Lucknow News - Times of India". द टाइम्स ऑफ़ इंडिया (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2018-03-07.
9. ↑ तनेजा, नलिनी. "A radical legacy". द हिन्दू (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2018-03-07.
10. ↑ "Explained: Who was Ashfaqullah Khan, and why did the British hang him?". द इंडियन एक्सप्रेस (अंग्रेज़ी में). 2019-01-10. अभिगमन तिथि 2018-03-07.
11. ↑ December 19, India Today Web Desk; December 19, 2017UPDATED:; Ist, 2017 17:14. "Kakori Conspiracy: Why were Ram Prasad Bismil, Ashfaqulla Khan and Roshan Singh hanged?". इंडिया टुडे (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2018-03-07.
12. ↑ एस° रवि (22 मार्च 2018). "Wielding the pen and pistol". द हिन्दू. अभिगमन तिथि 7 मार्च 2018.
13. ↑ "Kakori Martyrs Were Symbols of Communal Harmony in India's Freedom Struggle". द वायर.
14. ↑ Service, Tribune News. "Tributes paid to martyr Ashfaqulla Khan". Tribuneindia News Service (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2018-03-07.
15. ↑ "DD Urdu Program Schedule" (PDF). doordarshan.gov.in. 27 जुलाई 2019.